E-Learning Study Material

By - Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
V.K.S. UNIVERSITY, ARA BIHAR

B.A. Economics Hons First Year
First Paper

Q. Marginal Productivity Theory OF INTEREST (Criticism)

Q.. ब्याज की सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करें।

Scanned with CamScanner

Page-2

Marginal Productivity Theory OF INTEREST:

आलोचना (Criticism) – ब्याज की सीमान्त उत्पादकता के सिद्धान्त की प्रमुख आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं:-

1. अनुत्पादक ऋणों पर लिए गए ब्याज की व्याख्या यह सिद्धान्त नहीं करता है– सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि ब्याज पूँजी की उत्पादकता के कारण प्राप्त होता है। यह तभी संभव हो सकता है जबकि पूँजी का उपयोग उत्पादक कार्यों के लिए किया जाय। किन्तु व्यावहारिक जीवन में प्रायः देखने में आता है कि पूँजी का उपयोग अनुत्पादक कार्यों में भी किया जाता है तथा उस पर ब्याज लिया जाता है। जन्म, मृत्यु, एवं अन्य रीति-रिवाजों से जुड़े हुए घरेलू कार्यों के लिए उधार ली गयी पूँजी पर ब्याज लिया एवं दिया जाता है लेकिन यह सिद्धान्त अनुत्पादक ऋणों के ब्याज को स्पष्ट नहीं करता है।

(ii) यह सिद्धान्त एकपक्षीय है– सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त पूँजी की पूर्ति पक्ष पर ध्यान नहीं देता है अतः यह एक पक्षीय सिद्धान्त है। यह सही है कि उत्पादकता ब्याज की दर को प्रभावित करती है तथा पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में ब्याज की दर सीमान्त उत्पादकता के

बराबर होनी चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि ब्याज को केवल सीमान्त उत्पादकता ही प्रभावित करती है। वास्तव में सीमान्त उत्पादकता वह उच्चतम सीमा है जिससे अधिक ब्याज देने के लिए कोई भी तैयार नहीं होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि ब्याज की न्यूनतम सीमा क्या होगी जिसके नीचे पूँजीपति बचत देने को तैयार नहीं होंगे। इस न्यूनतम सीमा के बारे में यह सिद्धान्त मौन है। अतः आलोचक इस सिद्धान्त को एकपक्षीय मानते हैं।

(iii) सीमान्त उत्पादकता की सही जानकारी का नहीं होना - पूँजी की सीमान्त उत्पादकता की सही जानकारी नहीं हो सकती है, अतः इस सिद्धान्त से ब्याज की भी सही जानकारी नहीं हो पाती है।

(iv) सीमान्त उत्पादकता के घटते-बढ़ते से ब्याज दर में बदलाव का नहोना :- यदि हम इस बात को स्वीकार कर लें कि ब्याज-दर का निर्धारण पूँजी की सीमान्त उत्पादकता से होता है तो फिर सीमान्त उत्पादकता के बढ़ने तथा घटने के साथ-साथ ब्याज की दर को बढ़ना घटना चाहिए था। परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं होता है। व्यवहार में ब्याज की दर पूँजी की

सीमान्त उत्पादकता से अधिक ही होती है।

(v) सीमान्त उत्पादकता स्वयं भी ब्याज द्वारा निर्धारित होती है - इस सिद्धान्त के अनुसार पूँजी की सीमान्त उत्पादकता ब्याज दर का निर्धारण करती है लेकिन व्यवहार में ब्याज भी पूँजी की सीमान्त उत्पादकता को प्रभावित करता है। इसका कारण यह है कि जब ब्याज की दर अधिक रहती है तब उद्यमी पूँजी के स्थान पर उत्पादन के अन्य साधनों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर देता है। उसकी इस क्रिया से पूँजी की सीमान्त उत्पादकता बढ़ने लगती है और बढ़कर ब्याज के बराबर हो जाती है। इसके विपरीत यदि ब्याज-दर कम होती है तो उद्यमी (साहसी) अन्य साधनों के स्थान पर पूँजी का अधिक प्रयोग करके सीमान्त उत्पादकता को घटा देता है और वह घटकर ब्याज-दर के बराबर हो जाती है। इस प्रकार पूँजी की सीमान्त उत्पादकता तथा ब्याज-दर दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

अतः अन्य सिद्धान्तों की तरह इसकी भी आलोचना की जाती है।

Scanned with CamScanner